REVIEW OF RESEARCH

गुप्तकाल में नारी की भूमिका

कुमारी सुनीता

पी.एच.डी शोध छात्रा , संस्कृत विभाग जम्मू विश्व विद्यालय 'जम्मू'.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति में प्राचीन वैदिक काल से ही नारी का स्थान सम्माननीय रहा है, तभी तो कहा भी गया है कि "यह नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तंत्र देवता। यत्रैतास्तु न पुज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।।"[1] अर्थात जिस कुल में नारियों की पूजा होती हैं, उस कुल पर देवता प्रसन्न होते है और जिस कुल में नारियों की पूजा, वस्त्र, भूषण तथा मधुर वचनादि द्वारा सत्कार नहीं होता, उस कुल में सब कर्म निष्फल होते हैं। किसी भी राष्ट्र या समाज के अभ्युदय के लिए नारी और नर दोनों के कृतित्व का समान ही महत्व हैं। भारत ने सामाजिक अभ्युत्थान में योगदान देने के लिए नारियों को अवसर प्रदान किया हैं। आज की नारी नर के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती हैं, किन्तु फिर भी नारी को स्थान–स्थान पर कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है। हम सब भारतवासियों का परम कत्तर्व्य हैं कि हम परिवार, दे"ा, समाज का कल्याण चाहें, योग्य सन्तति चाहें और इन सबसे बढ़कर नारि"ाक्ति स्वरुप को पहचानें तथा उसका आदर सत्कार करें। नारी को नरक का द्वार समझने वाले शंकराचार्य ने भी अपनी माता की मृत्यु के समय उसको श्रद्धापर्व्वक प्रणाम किया है।[2] नारियों मे माता और पत्नी रुप ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। एक नारी ही f"ाक्षा–दीक्षा के कारण विवाह को प"चात् अच्छी पत्नी तथा माता बन सकती हैं। इन्हीं तीन रुपों के वर्णन से ही नारी का सामान्य रुप स्पष्ट हो सकता है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में इन तीन रुपों का ही महत्वपूर्ण स्थान हैं।

माता ही सन्तान को गर्भ में धारण करके उसके उत्पन्न हाने के पश्चात उसका पोषण करती हैं। अत एवं माता सर्वाधिक पूज्य नारी हैं। हमारे संस्कृत साहित्य में अनेक स्थानों इसलिए माता का गुणगान किया गया हैं। गुप्तकाल में भी नारी का माता के रुप में गुणगान किया गया है। एक गुप्त शासक ने समस्त रानियों का वर्णन प्रस्तुत हुआ हैं[4], जो इस बात का प्रमाण हैं कि उस युग में नारियों को कुछ आदर सम्मान अव"य प्राप्त थें। सन्तान को जन्म देकर माता का स्थान परिवार में ऊँचा माना जाता था। वह माता के शीर्षद पद पर आसीन मानी जाती थी।[5] गुप्तकाल तक नारी सभी रुपों में प्रतिष्ठित रही। कन्या, बहन, पत्नी के रुप में नारी को परिवार और समाज में आदर प्राप्त था, किन्तु माता के रुप में सभी वर्गो, जातियों एवं सभी लोगों द्वारा परम सम्मानित थी। वह शील, ममता, विद्या, य"ा और सम्पत्ति की प्रतीक मानी गयी हैं। समाज मे माता महत्व इतना अधिक हो गया था कि बिना माता परिवार अपूर्ण और अधूरा समझा जाता था।[6] नारी का मात्र रुप प्रारम्भिक युग से लेकर आज तक भारतीय समाज में पूजित रहा हैं।

नारी से परिवार बनता है और सभी आश्रम गृहस्थ आश्रम पर निर्भर करत है। विवाह जीवन का मूल आधार माना गया हैं। विवाह को स्त्री और पुरुष की पूर्णता तथा उनकी सामाजिक और आध्यात्मिक अभिव्यञ्जना का आधार माना जाता है।[7] यजुर्वेद में भी उस नारी के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया हैं, और अच्छी पत्नी माना गया हैं, जो सन्तान को जन्म देने वाली हैं–

'तस्मै नमत्तां जनयः सुपन्नी।'[8]

हमारी भारतीय संस्कृति मे दूसरे की पत्नी को भी माता के समाण पूज्य माना जाता हैं। महाभारत में यज्ञ ने युधिष्ठिर से पूछा की पृथ्वी से अधिक पूज्य कौन हैं, तो युधिष्ठिर का उत्तर था कि "माता पृथ्वी से

अधिक पूज्य और गौरवपूर्ण हैं।"[9] मौर्योत्तर काल से लेकर गुप्तकालीन समाज मे कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी के सम्पूर्ण नहीं होता था, इसलिए वह 'धर्मपत्नी' अथवा सहधर्मिणी मानी गई और घर की शोभा और सम्पन्नता नारी से जानी गेई थी।[10] पत्नी का पति के जोवन में बड़ा महत्व हैं क्योंकि विवाह के कर्मों के समय से वे सभी कर्मों मे साथ होते हैं। पुरुषों के फल एवं धनोपार्जन मे भी पत्नी के कर्म ही साथ होते हैं।[11] पत्नी की भूमिका को प्रेरणा देने, उसके सुख दुख में साथ निभाने वाली की थी, जिसका गुप्तकाल की नारियों ने पूर्णतः पालन किया। किन्तु पत्नी पर पति का पूर्ण प्रभुत्व स्वीकार किया गया तथा पत्नी की स्वतन्त्रता का सभी ने विरोध भी किया और पत्नी पर अनेक कत्तर्व्य लाद दिये गये। समुद्रगुप्त की पत्नी दत्त देवी कुलवधु एवं व्रतिनी थी।[12] किन्तु फिर भी उसे भी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थीं। गुप्तकाल की नारी निम्न गुणों से परिपूर्ण थी– उत्तम आचरण, पति की प्रसन्नता एवं कल्याण के लिए प्रयत्न"ाील रहना, काम वासना को नियन्त्रित रखना, घर की वस्तुओं को उचित स्थान पर रखने में कु"ाल होना चाहिए, मितव्ययी होना, सास ससुर की सेवा करना एवं उन्हे सदैव प्रसन्न रखना, अतिथियों का सम्मान करना आदि। परिवार में तो नारी को उच्च स्थान प्राप्त था, किन्तु समाज मे उसे निम्नस्तर पर ही रखा जाता था।[13]

गुप्तकाल में विधवा के पुनविवाह पर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया था। किन्तु एक स्वस्थ परम्परा के रुप में इसे प्रारम्भ से ही स्वीकार किया गया है। विधवा को पुर्नविवाह करने पर समाज से बहिष्कृत नहीं किया जाता था। पति का भाई न होने पर निकट सजातीय सम्बन्धि से पुर्नविवाह किया जा सकता था[14] किन्तु इनकी स्थिति कुछ अच्छी नहीं होती थी। ऊँचे वर्गों मे राजपरिवारों में विधवाऐं स्वय विवाद करना पसन्द नहीं करती थी और धार्मिक जीवन व्यतीत करती थी। निम्न वर्ग में सामान्य रुप से पुनर्विवाह हो जाया करते थे। धर्म से गिरने वाली विधवा नारी अनादर की पात्र होती थी, किन्तु धर्म युक्त विधवा सम्मान पाती थी।[15] गुप्त शासक चन्द्रगुप्त ने अपने भाई रामगुप्त की पत्नी से विवाह किया। रामगुप्त की मृत्यु के उपरान्त छोटे भाई होने के नाते चन्द्रगुप्त ने ध्रुवस्वामिनी से पुर्नविवाह किया, किन्तु यह विवाह आसाधारण परिस्थितियों में हुआ[16]। विधवा स्त्री का पालन करना उसके परिवार का कत्तर्व्य माना जाता था। विधवाओं का जीवन बहुत कठिन था। इनका अकेली रहना निषिद्ध माना गया है और निर्दे"ा दिया है कि उसे पिता, माता, पुत्र, भाई एवं सास ससुर के साथ ही रहना चाहिए। विधवा स्त्री को अपनी इन्द्रियों को पूर्ण रुप से नियन्त्रित रखना चाहिए।[17] विधवाओं के लिए आभूषणों का त्याग, के"ा सज्जा का त्याग, केवल श्वेत एवं मलीन वस्त्र धारण करना, के"ाों की वि"ोष प्रकार की चोटी बांधना, अंजन (काजल) का प्रयोग न करना आदि प्रावधान किया गया।[18] धार्मिक अनुष्ठानों, शुभ कार्यों एवं हर्षोल्लास में इनका आना अशुभ माना जाता था। धर्म कार्यों में इनका आना निषिद्ध था। धर्म शास्त्रकारों ने तो विधवा के आ"ाीर्वाद की तुलना सर्प के विष करते हुए बुद्धिमान पुरुषों को उसे स्वीकार न करने का परामर्" दिया है।[19] गुप्त काल मे सती प्रथा का इतना अधिक प्रचलन नहीं था। विधवाओं की इच्छा पर छोड़ दिया गया था कि वे पति की मृत्यु के बाद आत्मदाह करें या साध्वी बनकर जीवन यापन करें।

गुप्तकाल में गणिकाओं का भी वर्णन मिलता हैं। यह सार्वजनिक स्त्रियों का बहुत बड़ा समुदाय था और सामाजिक दृष्टि से यह समुदाय निम्न और गिरे स्तर का माना जाता था।[20] गणिकाओं के यहाँ साधारण कोटि के लोग ही नही, अपितु कुलीन, विद्वान, मन्त्री, न्यायधी"ा, अधिकारी और कर्मचारी, सम्पन्न व्यापारी तथा निम्न कोटि के लोग भी आते थे। ब्राह्मण तथा बौद्ध–भिक्षु सभी अपने मनोरंजन एवं रति–सुखे के लिए गणिका के वे"ाों (घर) में जाते थे।[21] गणिकाओं की बस्तियाँ नगरों से दूर होती थी। शूद्रों की भांति गणिनाओं को भी निम्न समझा जाता था ओर इनके घरों का अन्न ग्रहण करना भी पाप समझा जाता था।[22] गणिकाओं को शुभ अवसरों पर वि"ोष्ट रुप से बुलाया जाता था और ये अपनी कला का प्रद"ान करतीं थी तथा लोगों का मनोरंजन कर धन आदि कमाती थी।[23] यह नृत्य, गायन, वादन, चित्रकला, पाक"ाास्त्र आदि में निपुण होती थी। गणिका केन्द्र भव्य प्रांगणो में होते थे, जिनमे संगीत शाला होती थी। गणिकाएं प"ा–पक्षी भी पालती थी। नाटक, कविता, संगीत, नृत्य, वाधों में अपना निवास पर व्यस्त रहती थीं। दास–दासियों से गणिका केन्द्र भरा रहता था जो विभिन्न कार्यों से लगे रहते थे। इनके पास धन की कमी नहीं होती थी। वात्सायन के अनुसार गुप्तकालीन गणिकाओं में– शील, रुप, धैर्य और चौसठ कलाऐं आदि गुण विद्यमान थे।[24] इनके लिए कानून भी बनाये गये थे, किन्तु यौन अनैतिकता के कारण उनकी प्रतिष्ठा नहीं थी। अत– निष्कर्ष रुप से कहा जा सकता हैं कि गुप्तकाल मे नारी की स्थिति कुछ अच्छी थी, किन्तु फिर भी उसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं थी जन्म से लेकर मृत्यु तक उसे किसी न किसी के आधीन रहना पड़ता था। घर को सम्भालना ही नहीं, अपितु परिवार की

मर्यादा, सुख और समृद्धि को बनाना ही उसका परम कत्तर्व्य था। नारी की दे"ा, समाज व परिवार में अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. मनुस्मृति 3/46
2. आस्तां तावदियं प्रसूति समये दुवरिशूलव्यथा– नैरुच्ये तनु"ोषणं मलमयी शय्या च सांवासरी – शंकर दिग्विजय अं 15
3. (क) गर्भधारणपोषाभ्यां तेनमाता गरीयसी – मत्स्यपुररण 227/1150
   (ख) आ पुत्रासो न मातंर विम्रताः
   सा नौ देवासो वहिंषः सदन्तु। ऋग्वेद, 7/43/3
4. भारतीय अभिलेख संग्रह, पृ॰ 18
5. विष्णु धर्मसूत्र 1/10/31
6. गौतम धर्म सूत्र 1/2/5
7. भारतीय संस्कृति में नारी, पृ॰5
8. यजुर्वेद 12/35
9. किं स्विद, गुरुतरं भूमे... माता गुरुतरा भूमेः। महाभारत, वनपर्व 113/56
10. पारस्कर–ग्रहसूत्र 1/8/8
11. आपस्त धर्म सूत्र 2/6
12. ऐरण अभिलेख (गुप्त कालीन अभिलेख)
13. गुप्त युगीन व्यवस्था पृ॰ 102–103
14. हिन्दू परिवार मिमांसा पृ॰ 399
15. गुप्तकाल में नारियों को स्थिति पृ॰44
16. प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ॰ 382
17. याज्ञवलक्य स्मृति 1/86
18. गुप्तयुगीन समाज व्यवस्था पृ॰ 114
19. कात्यायन स्मृति पृ॰ 625
20. गुप्त साम्राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ॰ 218
21. गुप्त युगीन समाज व्यवस्था पृ॰131
22. याज्ञवलक्प स्मृति 1/161
23. प्राचीन भारत में नारी पृ॰ 19
24. –वही– पृ॰132

LBP PUBLICATION